



अरुण कमल



अरुण कमल (जन्म-15 फरवरी, 1954) आधुनिक हिन्दी साहित्य में समकालीन दौर के प्रगतिशील विचारधारा संपन्न, सहज शैली के प्रख्यात कवि हैं। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त इस कवि ने कविता के अतिरिक्त आलोचना भी लिखी हैं, अनुवाद कार्य भी किये ...



इस कविता में कवि ने शहरों की हर क्षण बदलती प्रवृत्तिवाली विडंबना की ओर संकेत किया है। शहरों में जीवन की सहजता समाप्त होती जा रही है, इस परिवर्तनशील दौर में मनुष्य संवेदनशून्य हो चला है। बनावटी चीज़ों के प्रति लोगों का लगाव बढ़ता जा रहा है। सब आगे निकलना चाहते हैं, आपसी प्रेम, लगाव और आत्मीयता घटती जा रही है। लोगों की और रहने के स्थान की पहचान खोती जा रही है। स्वार्थ केन्द्रित लोगों के पास दूसरे के लिए समय ही नहीं है। आज की चीज़ कल पुरानी पड़ जाती है, कुछ भी स्थाई नहीं है। यहाँ केवल स्मृतियों के सहारे जीया नहीं जा सकता है।

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज बन रहे हैं नए-नए मकान
में अकसर रास्ता भूल जाता हूँ
शहर में नये मुहल्ले रोज ही बसते हैं। ऐसी जगहों पर रोज
नये-नये मकान बनते हैं। रोज-रोज नये बनते मकानों के कारण
कोई भी व्यक्ति ऐसे इलाके में रास्ता भूल सकता है। कवि को
भी यही परेशानी होती है।



धोखा दे जाते हैं पुराने निशा
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढ़हा हुआ घर
और जमीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का
घर था इकमंजिला

जो पुराने निशान हैं वे धोखा दे जाते हैं क्योंकि कुछ पुराने निशान
तो सँदा के लिए मिट जाते हैं। अक्सर ऐसा होता है कि कोई बूढ़ा
पीपल का पेड़ गायब हो जाता है या कोई ढ़हा हुआ मकान अब नहीं
दिखता। पहले तो जमीन के खाली टुकड़े के पास से बाएँ मुड़ना था
और उसके बाद दो मकान के बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक से
इकमंजिले मकान में जाना था।



और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकाता
यहाँ रोज कुछ बन रहा है
रोज कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
लेकिन हर बार की तरह इस बार भी कवि ठकमका जाता है और या तो
एक घर पीछे या दो घर आगे चला जाता है। जहाँ पर रोज ही कुछ नया
बन रहा हो वहाँ पर रास्ते ढूँढ़ने के लिए आप अपनी याददाश्त पर भरोसा
नहीं कर सकते।



एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैसाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाजा खटखटाओ
और पूछो – क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

एक ही दिन में सबकुछ इतना बदल जाता है कि एक दिन पहले
की दुनिया पुरानी लगने लगती है। ऐसा लगता है जैसे महीनों
बाद लौटा हूँ। अब सही घर ढूँढ़ने का एक ही उपाय है कि हर
दरवाजे को दस्तक दो। अब तो बारिश भी आने वाली और उम्मीद
है कि कोई परिचित मुझे देख ले और आवाज लगा दे।



